विचार बिन्दु

उपकार के लिए अगर कुछ छल भी करना पड़े तो उससे आत्मा की हत्या नहीं होती। –प्रेमचंद

साइबर ठगी का नया अवतार डिजिटल अरेस्ट

साइबर ठगी का नया अवतार डिजिटल अरेस्ट बड़ी तेजी से अपने पांव पसारता जा रहा है। इस साल के शुरुआती चार माह की ही बात करें तो अप्रेल तक देश में इस नए अवतार के 4599 मामलें सामने आ चुके हैं। देश की धड़कन दिल्ली की ही बात करें तो प्रतिमाह औसतन 10 मामलें इस तरह के आ रहे हैं। मजे की बात यह है कि साइबर ठगी के इस नए कलियुगी अवतार के सबसे अधिक शिकार पढे-लिखे और समझदार लोग हो रहे हैं। कोई बैंक मैनेजर है तो कोई रिटायर्ड अधिकारी-कर्मचारी, तो कोई विदेशों में अध्ययन का सपना संजाए युवा है तो कोई समाज के प्रबुद्ध वर्ग से जुड़ा व्यक्ति। मजे की बात यह है कि साइबर ठगी के इस नए अवतार डिजिटल अरेस्ट में चंद मिनटों में खेल नहीं होकर कई घंटों से लेकर कई दिनों यहां तक की एक मामलें में तो 17 दिन तक डिजिटली अरेस्ट का मामला सामने आ चुका है। दिल्ली, जयपुर, फरिदाबाद सहित देश के कोने-कोने से इस तरह के मामलें सामने आने के साथ ही मीडिया की सुर्खियां बन रहे हैं। खास बात यह है कि लंबे समय तक लगातार डिजिटली अरेस्ट के बावजूद ठगी का शिकार व्यक्ति तनाव में तो चला जाता है पर अपनों से साझा करने में हिटकिचाता है और यही कारण है कि इस तरह से साइबर ठगी करने वालों के हौसले बुलंद हो जाते है।

डिजिटली अरेस्ट का मतलब साफ-साफ यह है कि कुछ लोगों के गिरोह में से गिरोह का कोई सदस्य लक्षित व्यक्ति को विडियो कॉल करके पहले तो डराता है कि आपके नाम से या आपने कोई नई सिम जारी कराई है और उसके माध्यम से आप अवैध गतिविधियों में लिप्त है। वे पुलिस, नारकोटिक्स, ट्राई या दसियों तरह की किसी संस्था के अधिकारी बन कर बात करते हैं और गैर कानूनी ट्रांजेक्शन से लेकर कोई गैरकानूनी पार्सल भेजने या ऐसे ही किसी तरह के मनगडंत आरोप मड़ते हुए इस कदर डरा देते हुए हैं कि व्यक्ति डर के मारे उनके जाल में फंस जाते हैं। मजे की बात यह है कि लक्षित व्यक्ति को जब तक वे पूरी तरह से ठगी में कामयाब नहीं हो जाते हैं तब तक वीडियो कॉल से हटने का मौका भी नहीं देते। डर के मारे व्यक्ति उनके जाल में फंस जाता है और उनकी डिमांड पूरी करने में लग जाता है। यहां तक कि इस तरह के साइबर ठग अपने टारगेट को स्वाईप आदि एप के माध्यम से ऑपरेट तक करते हुए पैसा खातों से यहां तक कि एफडी और म्यूचुअल फण्ड तक से पैसा वसूलने में सफल हो जाते हैं। ठगी का शिकार व्यक्ति डिजिटली अरेस्ट होने के बावजूद अपने परिजनों तक को हालात से अवगत करा नहीं पाता या यों कहें कि उसे इस तरह से मानसिक रुप से डरा दिया जाता है कि वो अपने में ही सिमट कर रह जाता है और तनाव में आ जाता है।

ऐसा नहीं है कि डिजिटल अरेस्ट के इस नए अवतार से साइबर क्राइम ब्यूरों या अपराध अनुसंधान करने वाले वाकिफ नहीं हो। इस नई तरह की ठगी के बारे में जानकारी होने के कारण ही इससे बचने के उपायों व जगरुकता के प्रयास किये जाते रहे हैं। 1930 पर इसकी शिकायत की जा सकती हैं तो साइबर अपराध की सरकारी साइट पर जा कर सहायता मांगी जा सकती हैं इसी तरह से सोशियल मीडिया साइट के माध्यम से भी सहायता प्राप्त की जा सकती है तो शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है।

ऐसा नहीं है कि डिजिटल अरेस्ट के इस नए अवतार से साइबर क्राइम ब्यूरों या अपराध अनुसंधान करने वाले वाकिफ नहीं हो। इस नई तरह की ठगी के बारे में जानकारी होने के कारण ही इससे बचने के उपायों व जगरुकता के प्रयास किये जाते रहे हैं। 1930 पर इसकी शिकायत की जा सकती हैं तो साइबर अपराध की सरकारी साइट पर जा कर सहायता मांगी जा सकती हैं इसी तरह से सोशियल मीडिया साइट के माध्यम से भी सहायता प्राप्त की जा सकती है तो शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है। दरअसल होता यह है कि ठगी का शिकार व्यक्ति पहले तो तनाव में आ जाता है और फिर परिजनों से भी साझा करने में डरने लग जाता है। नहीं तो उस पर जो आरोप लगाये जा रहे हैं उससे संबंधित विभाग से संपर्क साधा जा सकता है। समझदार होने के बावजूद डर इस तरह से सताने लगता है कि व्यक्ति अपनी निजी जानकारी तक साझा कर लेता है और रुपये के लेन-देन की बात करने लगता है ताकि वह पीछा छुड़ा सके। पर वह यह भूल जाता है कि पैसा देने से पीछा नहीं छूटता बल्कि उसे आगे का रास्ता मिल जाता है और ठगी करने वाले और अधिक ब्लेकमेल करने लगते हैं।

जहां तक ठगी के शिकार लोगों के बेकग्राउण्ड का सवाल है तो इनकी काबिलियत पर किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता पर मजे की बात यह है कि अच्छे बेकग्राउण्ड के लोग भी आसानी से इस तरह की ठगी के आसानी से शिकार हो रहे हैं। यह अपने आपमें चिंतनीय है। डिजिटली अरेस्ट के मामलों में बिना किसी भय के अपने परिजनों, मित्रजनों या विश्वसनीय से साझा करने के साथ ही किसी भी तरह से पुलिस व साइबर क्राइम में शिकायत दर्ज कराने में देरी नहीं करनी चाहिए। जब हम किसी अपराध में लिप्त ही नहीं है तो फिर डरने का क्या काम इस भावना के साथ साइबर क्राइम से सहायता मांगने या सोशियल मीडिया पर साझा करने से भी नहीं झिझकना होगा। इसके साथ ही संभव हो तो जिस अपराध का आरोप लगाया जा रहा है उस संस्था से भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से संपर्क साध कर जानकारी व सहायता प्राप्त की जा सकती है। लब्बोलुबाब यह है कि इस तरह की समस्या का समाधान केवल और केवल व्यक्तिगत जागरुकता से ही संभव हो सकता है और इसके लिए हमें स्वयं को जागरुक रहने के साथ ही दूसरे लोगों को भी जागरुक करना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

जल संकट: भारत में तीन गुना बढ़ जाएगी भूजल में गिरावट की दर

राम शर्मा

दुनिया भर में बढ़ता तापमान अपने साथ अनगिनत समस्याएं भी साथ ला रहा है, जिनकी जद से भारत भी बाहर नहीं है। ऐसी ही एक समस्या देश में गहराता जल संकट है जो जलवायु में आते बदलावों के साथ और गंभीर रूप ले रहा है। इस बारे में अंतराष्ट्रीय शोधकर्ताओं द्वारा किए नए अध्ययन से पता चला है कि बढ़ते तापमान और गर्म जलवायु के चलते भारत आने वाले दशकों में अपने भूजल का कहीं ज्यादा तेजी से दोहन कर सकता है। अनुमान है कि इसके चलते 2040 से 2080 के बीच भूजल में आती गिरावट की दर तीन गुणा बढ़ सकती है। इस रिसर्च के नतीजे हाल ही एक अंतरारष्ट्रीय जर्नल साइंस एडवांसेज में प्रकाशित हुए हैं।

गौरतलब है कि भारत दुनिया के अन्य देशों की तुलना में पहले ही कहीं ज्यादा तेजी से अपने भूजल का दोहन कर रहा है। आंकड़ों से पता चला है कि भारत में हर साल 230 क्यूबिक किलोमीटर भूजल का उपयोग किया जा रहा है, जोकि भूजल के वैश्विक उपयोग का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। देश में इसकी सबसे ज्यादा खपत कृषि के लिए की जा रही है। देश में गेहूं, चावल और मक्का जैसी प्रमुख फसलों की सिंचाई के लिए भारत बड़े पैमाने पर भूजल पर निर्भर है। लेकिन जैसे-जैसे तापमान में वृद्धि हो रही है, खेत तेजी से सूख रहे हैं।

इसके साथ ही मिट्टी में नमी को सोखने की क्षमता भी घट रही है, जिसकी वजह से भारत में भूजल स्त्रोतों को रिचार्ज होने के लिए पर्याप्त जल नहीं मिल रहा है। नतीजन साल दर साल देश में भूजल का स्तर तेजी से नीचे गिरता जा रहा है। अनुमान है कि बढ़ते तापमान के साथ जल उपलब्धता में आने वाली इस गिरावट के चलते एक तिहाई लोगों की जीविका पर खतरा मंडराने लगेगा। इसके न केवल भारत में बल्कि वैश्विक परिणाम भी सामने आएंगें। साथ ही इससे देश में खाद्य सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा हो जाएगा।

इस बारे में अध्ययन से जुड़ी वरिष्ठ लेखक और यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के स्कूल फॉर एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी में सहायक प्रोफेसर मेहा जैन का कहना है कि, "भारत में किसान बढ़ते तापमान से निपटने के लिए अधिक सिंचाई का उपयोग कर रहे हैं। यह एक ऐसी रणनीति जिस पर भूजल में आती गिरावट के पिछले अनुमानों के बारे में विचार नहीं किया गया है।"

उनके मुताबिक यह चिंताजनक है क्योंकि भारत दुनिया में सबसे ज्यादा भूजल का उपयोग करने वाला देश है जो क्षेत्रीय और वैश्विक खाद्य उत्पादन दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बता दें कि अपने इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने भारत में भूजल को होने वाले नुकसान की दरों का अनुमान लगाने के लिए 10 जलवायु मॉडलों से प्राप्त बारिश और तापमान के अनुमानों का उपयोग किया है। अध्ययन में इस बात पर गौर किया गया है कि देश में बढ़ते तापमान के चलते फसलों पर पड़ने वाले दबाव से निपटने के लिए पानी की मांग बढ़ सकती है। इसकी वजह से किसानों को फसलों की सिंचाई में वृद्धि कर सकती है। रिसर्च के अनुसार बढ़ते तापमान और सर्दियों में बारिश में आती गिरावट के चलते भूजल में गिरावट आ रही है, जिसकी भरपाई मानसून में होने वाली अतिरिक्त बारिश भी नहीं कर पा रही।

इस बारे में अध्ययन और ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय से जुड़े निशान भट्टराई का कहना है कि, यदि तापमान में होती वृद्धि इसी तरह जारी रहती है तो बढ़ते तापमान से भूजल में आती गिरावट की दर तीन गुणा बदतर हो सकती है, जो दक्षिण और मध्य भारत के क्षेत्रों को भी प्रभावित करेगी। उनके मुताबिक जब तक हम भूजल को बचाने के उपाय नहीं करते, तब तक बढ़ते तापमान से भारत में भूजल से जुड़ी मौजूदा समस्याएं और बदतर हो जाएंगी। इससे देश में बदलती जलवायु के साथ खाद्य और जल सुरक्षा के लिए अतिरिक्त चुनौतियां पैदा हो जाएंगी। अपने इस हालिया अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने कई स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों को एकत्र किया है और उनका एक डेटासेट तैयार किया है। इसमें देश के हजारों कुओं में भूजल के स्तर, फसलों पर बढ़ता जल तनाव और उपठाह से प्राप्त आंकड़ों के साथ मौसम संबंधी रिकॉर्ड को भी शामिल किया गया है। पिछले अध्ययनों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि जलवायु में आते बदलावों के चलते 2050 तक देश की प्रमुख फसलों की उपज में 20 फीसदी तक की कमी आ सकती है। इसके साथ ही, देश में भूजल का स्तर चिंताजनक दर से कम हो रहा है, जिसका मुख्य कारण सिंचाई के लिए भूजल का बढ़ता दोहन है। बता दें कि दुनिया भर में भूमिगत जल, साफ पानी का सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला स्त्रोत हैं। आंकड़ों की मानें तो वैश्विक स्तर पर करीब 200 करोड़ लोग, अपनी रोजमर्रा की जरूरतों और सिंचाई के लिए भूजल पर ही निर्भर हैं। रिसर्च के अनुसार दुनिया की 20 फीसदी आबादी इन भूजल स्त्रोतों द्वारा सिंचित फसलों का उपभोग का रही है। हालांकि बढ़ती आबादी और उनकी जरूरतों के साथ इन भूजल स्त्रोतों पर दबाव भी बढ़ता जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय जर्नल नेचर में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि 2050 तक दुनिया के 79 फीसदी तक भूजल स्त्रोत खत्म हो जाएंगे। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि उत्तर भारत जो कि देश में गेहूं और चावल का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है, वहां 5,400 करोड़ घन मीटर प्रति वर्ष की दर से भूजल घट रहा है। नीति आयोग ने भी अपनी एक रिपोर्ट में देश में लगातार घटते भूजल के स्तर को लेकर चिंता जताई थी। इस रिपोर्ट के अनुसार भूजल में आ रही यह गिरावट 2030 तक गंभीर खतरे का रूप ले लेगी। इतना ही नहीं 2020 तक दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद सहित 21 शहरों में भूजल करीब-करीब खत्म होने की कगार पर पहुंच जाएगा।

भारत में गिरते भूजल की समस्या से निपटने के लिए सरकार ने जलदूत नामक मोबाइल ऐप भी लॉन्च किया है। इसका मकसद भारत के गांवों में गिरते भूजल के जलस्तर का पता लगाना है, जिससे पानी की समस्या को दूर किया जा सके। जल जीवन है, लेकिन जिस तरह से देश में इसका दोहन और कुप्रबंधन किया जा रहा है, उसके आने वाले वक्त में गंभीर परिणाम हो सकते हैं। गौरतलब है कि सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा आयोजित 2023 पॉलिसी एंड प्रैक्टिस फोरम में जल संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा था कि भारत में जल संकट, जल संसाधनों की कमी के चलते नहीं बल्कि उसके कुप्रबंधन के कारण बढ़ रहा है।

सिर्फ भारत ही नहीं दुनिया के कई अन्य देश भी गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। भले ही हम इसके लिए जितना मर्जी अन्य कारणों को कोस ले, लेकिन सच यही है कि इस अमूल्य संसाधन में आती गिरावट के लिए हम मनुष्य ही जिम्मेवार हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में हमारी नस्लों को पानी की गंभीर कमी के लिए तैयार रहना होगा।

–राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

प्रशासन और पुरातत्व विभाग सीमा पर बने तीन किलों को संरक्षित करने के विकल्प तलाश रहे

- **जैसलमेर के आसपास बने घोटारू, गणेशिया के साथ-साथ किशनगढ़ किले की किस्मत संवर नहीं पाई है**
- **राज्य सरकार की ओर से घोटारू, गणेशिया और किशनगढ़ किले को संरक्षित स्मारक घोषित करने की घोषणा 22 नवम्बर 2011 में जारी कर दी थी**

जैसलमेर, (निसं.)। तत्कालीन जिला कलेक्टर गिरीराजसिंह कुशवाहा द्वारा वर्ष 2011 में अपने कार्यकाल में राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव एस. अहमद को सरहद स्थित घोटारू, गणेशिया और किशनगढ़ किले को संरक्षित स्मारक घोषित करने हेतू पत्र लिखा गया था। उसी वजह से कला साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व विभाग की ओर से जैसलमेर के आसपास बने घोटारू, गणेशिया के साथ-साथ किशनगढ़ किले को संरक्षित स्मारक घोषित करने के लिये इसका निरीक्षण कर इसकी रिपोर्ट तैयार करने के लिये एक दल आया था।

इसमें पुरातत्व अधीक्षक सहित जैसलमेर संग्रहालय अध्यक्ष भी शामिल रहे। इस निरीक्षण दल की तरफ से बनाई गई रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने अधिसूचना जारी कर आपत्तियां मांगी थी। आपत्तियां नहीं मिलने की स्थिति में कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व विभाग ने राजस्थान स्मारक पुरावशेष स्थान और प्राचीन वस्तु अधिनियम 1961 के तहत राज्य सरकार की ओर से घोटारू, गणेशिया और किशनगढ़ किले को संरक्षित स्मारक घोषित करने की घोषणा 22 नवम्बर 2011 में जारी कर दी।

संरक्षित स्मारक घोषित होने के बाद यहां के लोगों को उम्मीद जगी थी कि अब इस किले के दिन बदलने वाले हैं लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सरकारी उपेक्षा के चलते संरक्षित स्मारक होने के बाद भी न्यायिक रस्साकशी में फंसे इन किलों की किस्मत संवर नहीं पाई है। जैसलमेर की पाकिस्तान से लगती सीमा पर बने होने के कारण तीनों किले

भारत-पाक सीमा के समीप स्थित जर्जर होता किशनगढ़ किला।

सीमा सुरक्षा बल के अधिकार क्षेत्र में है। किले संरक्षित स्मारक होने के कारण बीएसएफ मरम्मत करने में असमर्थ है। पुरातत्व विभाग के संरक्षण में घोषित होने के कारण बीएसएफ वाले कोई आनाकानी नहीं कर सकते पुरातत्व विभाग और जिला प्रशासन की संवेदनहीनता की वजह से पिछले 13 साल से किलों को कोई रखरखाव नहीं मिला है। किशनगढ़ सहित तीनों गौरवशाली किले जो कि पुरातत्व विभाग के अधीक्षक इमरान अली के बताये अनुसार संरक्षित स्मारकों के रुप में सुचिबद्ध है। अपनी सारसंभाल के अभाव में जर्जर होते जा रहे है। किशनगढ़ किला मुगल और सिंध शैली का नायाब नमूना है। यह किला जैसलमेर जिला मुख्यालय से पकिस्तान सीमा की तरफ 145 किलोमीटर दूर स्थित है। सीमा पर बने होने के कारण सुरक्षा के लिहाज से इस किले पर पर्यटकों के आने की पाबंदी लगी हुई है और यही वजह है कि देखरेख के अभाव में यह किला दम तोड़ता नजर आ रहा है। इतिहासकार बताते हैं कि दावद खां के पौत्रों से हुई संधि के बाद महारावल मूलराजसिंह के समय इसका नाम बदल कर कृष्णगढ़ रखा गया था। जिसे आज किशनगढ़ के नाम से जाना जाता है। अठारहवीं शताब्दी का यह किला वास्तुशिल्प संरचना का अद्भुद नमूना है। इस किले का निर्माण पक्की इंटों से करवाया गया है और इसमें दो मंजिलें बनी हुई है। किले में मस्जिद, महल और पानी का कुआ भी बना हुआ है. मुगल और सिंध शैली के मिश्रण से बना यह किला अपनी निर्माण तकनीक में बेजोड़ है। यही कारण है कि आज भी उपेक्षा का दंश झेलने के बावजूद यह डटा खड़ा है। सीमा सुरक्षा बल ने किशनगढ़ के पास सैन्य चौकी का निर्माण किया है जहां पर सैकड़ों सैनिक रहते हैं। यह किला दिन-ब-दिन अपना स्वरूप खोता जा रहा है। आगामी दिनों में अगर इस किले की ओर गंभीरता पूर्वक नजर नहीं डाली गई तो जर्मीदोज होता यह किला इतिहास के पन्नों में ही सिमट कर रह जायेगा। घोटारू किला 1765 में बनाया गया था यह रेगिस्तानी रेशम मार्ग पर एक प्रमुख किला था वर्तमान में खंडहर हो चुका है किले के अंदर घोटारू माता का मंदिर है। ऐतिहासिक रुप से घोटारू किला सिंध जैसलमेर रियासत के बीच यात्रा करने वाले व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र था। घोटारू किले में व्यापारियों के लिए सुरक्षा और सुविधाएं प्रदान की जाती थी। गणेशिया किले की भी स्थिति खराब है।

2011 में तत्कालीन जिला कलेक्टर गिरीराजसिंह कुशवाहा द्वारा अपने कार्यकाल में सीमावर्ती गुंजनगढ़ की सड़क का निर्माण भी करवाया गया था। उनके जिले की जनता के प्रति एक पिता तुल्य भाव रहे। कुशवाहा निरंतर जैसलमेर पदासीन रहते तो आज तक तीनों किलो का पुरातत्व विभाग को सहयोग देकर नया जीवन दान दे देते जिससे जैसलमेर के पर्यटन को पंख लग जाते। वर्तमान जिला कलेक्टर प्रतापसिंह का कहना है कि प्रशासन पुरातत्व विभाग के संपर्क में है, वे तीनों किलों को संरक्षित करने के विकल्प तलाश रहे हैं।

राशिफल गुरूवार 27 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, शतभिषा नक्षत्र दिन 11:37 तक, आयुष्मान योग रात्रि 12:28 तक, गर करण प्रात: 7:48 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:32 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 11:37 से आरम्भ होगा। भद्रा सांय 6:40 से आरम्भ होगी। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:22 तक, चर 10:47 से 12:29 तक, लाभ-अमृत 12:29 से 3:55 तक, शुभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:20

मेष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा हो सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर नियंत्रण संयम रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

जयपुर मिलिट्री स्टेशन में पहली प्लास्टिक वेस्ट द्वारा निर्मित सड़क का उद्घाटन

जयपुर। जयपुर मिलिट्री स्टेशन में सगतसिंह रोड अंडरब्रिज से कब्स कॉर्नर कॉम्प्लेक्स तक 100 मीटर लंबी पहली प्लास्टिक वेस्ट रोड का उद्घाटन मेजर जनरल आरएस गोदारा, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, 61 सब एरिया द्वारा बुधवार को किया गया।

जनसंपर्क अधिकारी (रक्षा) कर्नल अमिताभ शर्मा द्वारा मिली जानकारी के अनुसार जयपुर मिलिट्री स्टेशन प्लास्टिक वेस्ट रोड बनाने वाला दूसरा मिलिट्री स्टेशन है और इसे अपने रखरखाव कार्यक्रम का हिस्सा बनाने वाला पहला सैन्य स्टेशन है। इससे पहले 2019 में उत्तर पूर्व में नारंगी मिलिट्री स्टेशन में एक प्लास्टिक वेस्ट रोड बनाई गई थी। जीओसी 61 सब एरिया, मेजर जनरल गोदारा ने उद्घाटन के दौरान साइट पर एक पौधारोपण भी किया जो विकास और प्रगति का प्रतीक है। इस अवसर पर चीफ इंजीनियर जयपुर जोन, कमांडर वर्क्स इंजीनियर, एडम कमांडेंट, कर्नल क्यू 61 सब एरिया के साथ-साथ गैरीसन इंजीनियर (दक्षिण) के कर्मचारी मौजूद थे। सड़क का निर्माण गैरीसन इंजीनियर (दक्षिण), चीफ इंजीनियर जयपुर जोन के तत्वावधान में भारतीय सेना की हरित सैन्य स्टेशन बनाने की नीति के अनुरूप किया गया है। इस परियोजना में दीप कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड ने भी योगदान दिया।

- **इससे पहले 2019 में उत्तर पूर्व में नारंगी मिलिट्री स्टेशन में प्लास्टिक वेस्ट रोड बनाई गई थी**

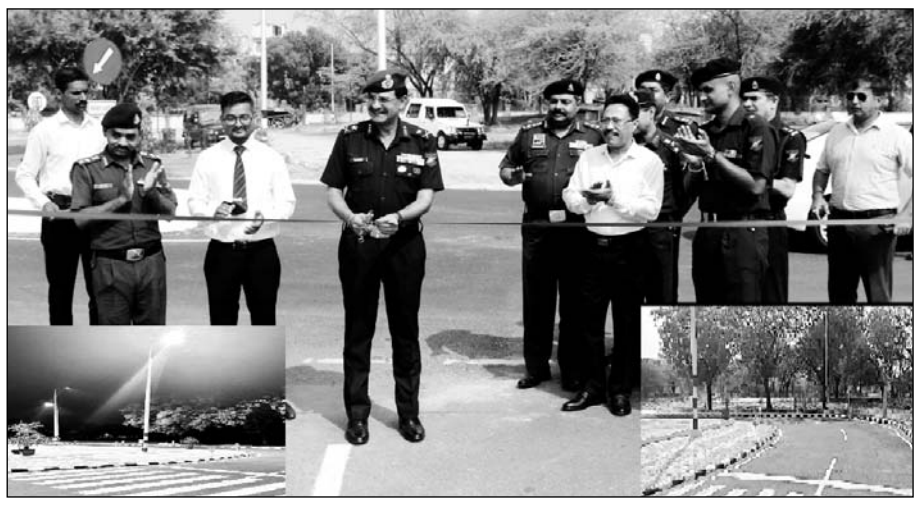

जयपुर मिलिट्री स्टेशन में सगतसिंह रोड अंडरब्रिज से कब्स कॉर्नर कॉम्प्लेक्स तक प्लास्टिक वेस्ट रोड का उद्घाटन मेजर जनरल आरएस गोदारा, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, 61 सब एरिया ने किया।

परियोजना अधिकारी मेजर तुषार नांबियार, गैरीसन इंजीनियर (दक्षिण), जयपुर मिलिट्री स्टेशन ने बताया कि प्लास्टिक वेस्ट से निर्मित सड़क से होने वाले लाभों में पारंपरिक सड़कों की तुलना में स्थायित्व में वृद्धि, कम टूट-फूट, कम जल उपयोग और अधिक स्थिरता शामिल है।

खेत में मृत नर पैंथर का शव मिला

राजसमंद, (निसं)। जिले में कुंभलगढ़ ब्लॉक की ग्राम पंचायत अंटालिया के ग्राम बीड की भागल में मृत पैंथर की सूचना मिलने से सनसनी फैल गई। डीसीएफ सुदर्शन शर्मा ने बताया कि बुधवार सुबह 9 बजे सूचना मिली कि ग्राम पंचायत अंटालिया के ग्राम में निजी खातेदारी बीड में एक पैंथर का शव पड़ा है।

सूचना पर मिलने पर क्षेत्रीय वन अधिकारी झीलवाडा रेंज झीलवाडा स्टॉफ के साथ मौके पर पहुंचे और मृत नर पैंथर के शव को कब्जे में लिया। डीसीएफ शर्मा ने बताया कि देखने में पैंथर की आयु करीब 6 वर्ष की लग रही थी। नर पैंथर का शव 3-4 दिन पुराना था हालांकि उसके चारों पैरों के नाखून व दांत सही सलामत थे। मौके पर ही चिकित्सा दल के पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा पोस्टमार्टम की कार्यवाही की गई। चिकित्सा दल में डॉ. सतीश शर्मा दिवेर, डॉ. सुरेश कुमार जांगिड कुंभलगढ़, डॉ. गोवा राम चारभुजा द्वारा पोस्टमार्टम किया गया। पोस्टमार्टम के पश्चात् मौके पर ही उपस्थित लोगों, राजस्व विभाग एवं पुलिस विभाग के प्रतिनिधि के समक्ष उक्त मृत नर पैंथर का अंतिम सस्कार किया गया।